

क्या तुम्हारा रोजा कुबूल हुआ?

तौरत : यशायाह 58:1-14

[अल्लाह रब्बुल आलमीन का इरशाद है:]

बुलंद आवाज़ में फ़रियाद करो, जिस तरह से बिगुल से आवाज़ निकलती है।
जितना तेज़ हो सके उतना जोर से फ़रियाद करो।
मेरे बन्दों के घर वालों को उनके गुनाहों के बारे में बताओ!⁽¹⁾

हर दिन वो मुझे ढूँढते हैं,
और वो लोग मेरे रास्ते को जानकर खुश नज़र आते हैं,
कि जैसे वो नेक लोगों में से हों जो सही काम करते हैं,
और इस तरह से कि जैसे वो कभी अपने रब के बनाए हुए कानून कभी भूलेंगे भी नहीं।
वो मुझसे इंसान की फ़रियाद करते हैं,
और कहते हैं कि मेरे पास होने से उन्हें बहुत खुशी हासिल होती है।⁽²⁾

लोग कहते हैं: “ए मेरे परवरदिगार, हमने किस तरह से रोज़े रखे हैं, तू देखता क्यों नहीं?
देखो हम किस तरह से तेरे सामने ताज़ीम में झुकते हैं,
तू इस बात से बेखबर क्यों है?”
अल्लाह ताअला इरशाद फ़रमाता है: तुम अपने आप को देखो!
तुम जब रोज़ा रखते हो, तो वही करते हो जो तुम चाहते हो,
और अपने नौकरों पर जुल्म करते हो।⁽³⁾

देखो किस तरह से तुम रोज़े में एक दूसरे से बहस और लड़ाई करते हो,
और मार-पीट करते हो!
इस तरह का रोज़ा तुम्हारी आवाज़ को ज़न्नत तक नहीं पहुंचने देगा।⁽⁴⁾

अल्लाह ताअला इरशाद फ़रमाता है: क्या इस तरह का रोज़ा मुझे पसंद है?
वो रोज़ा कि जिसमें तुम अपने आपको नर्म जाहिर करते हो,
अपने सर को इस तरह से झुकाते हो कि जिस तरह पेड़ खुद को हवा से झुका देते हैं।
तुम सादे कपड़े पहनते हो और खुद को मिट्टी से ढक लेते हो।
क्या तुम इसको रोज़ा रखना बोलते हो?
क्या तुम ये समझते हो कि इस तरह का रोज़ा तुम्हारे रब को खुश कर सकता है?⁽⁵⁾

नहीं! मुझे इस तरह का रोज़ा चाहिए:
बेगुनाह लोगों को कैद से आज़ाद करो;
बहुत ज़्यादा मेहनत करने वाले लोगों के बोझ को कम करो।
जिन लोगों पर जुल्म हुआ है उन्हें आज़ाद कर दो,
और हर गुलामी की जंजीर को तोड़ दो।⁽⁶⁾

अपनी रोटी को भूखे लोगों में बाँटो,
और बेघर ग़रीब लोगों को अपने घर में ठिकाना दो।
उन लोगों के जिस्म को ढको कि जिनके पास कपड़े नहीं हैं,
और अपने ज़रूरतमंद रिश्तेदारों से छुप कर मत रहो।⁽⁷⁾

तब तुम सुबह की तरह रोशन हो जाओगे,
और तुम्हारे ज़ख्म बहुत जल्दी भर जाएंगे।
तुम्हारी नेकी तुम्हारे आगे चलेगी,
और तुम्हारे परवरदिगार की ताकत तुम्हारी पीछे से हिफ़ाज़त करेगी।⁽⁸⁾

तब जब भी तुम पुकारोगे तो तुम्हारा परवरदिगार तुम्हें जवाब देगा।
जब तुम आवाज़ दोगे, तो वो कहेगा: “मैं यहाँ हूँ।”
तो इसलिए तुम जुल्म के सताए हुए लोगों के बोझ को कम करो।
दूसरों पर उँगली उठाना और अफ़वाह फैलाना बंद करो!⁽⁹⁾

तुम अगर भूखे लोगों को खाना खिलाओगे,
और परेशान लोगों की मदद करोगे,
तो तुम्हारा नूर अंधेरे से चमक कर बाहर निकलेगा,
और तुम्हारी अंधेरी रात दिन की तरह चमक उठेगी।⁽¹⁰⁾

अल्लाह ताअला तुम्हें हर वक़्त रास्ता दिखाएगा,

तुम्हारी हर जरूरत का ख्याल रखेगा,
और तुम्हारी हड्डियों को मजबूत कर देगा।
तुम एक सींचे हुए बाग की तरह होगे,
उस झरने की तरह होगे कि जिसका पानी कभी रुकता नहीं।⁽¹¹⁾

तुम्हारी बर्बाद हो चुकी इमारतों को फिर से बनाया जाएगा।
और तुम उस पर अपनी आने वाली नस्लों की नींव डालोगे।
तुम्हें लोग पुरानी दीवारों को नया करने वाला कहेंगे,
जो घरों को और सड़कों को फिर से सही कर के उन्हें आबाद करते हैं।⁽¹²⁾

अगर तुम अल्लाह ताअला के दिन को याद रखो,
और उस दिन अपनी रोज़ी-रोटी की फ़िक्र ना करो,
और खुशी से उस दिन को अल्लाह रब्बुल अज़ीम का दिन कुबूल करो,
अगर तुम इस दिन को अल्लाह ताअला की इबादत में गुज़ारो,
और अपने तरीके से काम ना करो,
और अगर तुम अपने वक़्त को फ़ालतू बातें करने और मौज-मस्ती में ना गुज़ारो,⁽¹³⁾
तब तुम्हारी खुशी सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल आलमीन की ज़ात में होगी।
वो तुम्हें बहुत इज़्ज़त अता करेगा,
और तुमको वो उस विरासत से देगा कि जिसका वादा उसने तुम्हारे बुज़ुर्गों,
याकूब^(अ.स) [और इब्राहीम^(अ.स)] से किया है।
ये अल्लाह रब्बुल अज़ीम का कलाम है!⁽¹⁴⁾